P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-8* (Part-2) April- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

उत्तराखण्ड में प्रवास एवं प्रवासित स्थान का सह–सम्बन्ध

अर्चना
असिस्टेन्ट प्रोफेसर,
भूगोल विभाग,
टी0एस0आर0राजकीय महाविद्यालय,
नैनीड़ांडा पटोटिया पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड, भारत

सारांश

जनांकिकी विश्लेषण संसाधन परिवर्तन के एक घटक के रूप में प्रवास केंद्रीय स्थान रखता है। मनुष्यों में आदिकाल से ही प्रवास की प्रवृत्ति देखने को मिलती है, उसे अपने लिये जहाँ अनुकूल वातवारण मिलता है, वही जाकर जीवन यापन करने लगता है। प्राचीन समय में जब परिवहन के साधनों का विकास नहीं हो पाया था तो प्रवास की प्रवृत्ति आन्तरिक रूप से ही देखने में मिलती थी, लेकिन जैसे–2 परिवहन के साधनों का विकास हुआ, जनसंख्या विकसित क्षेत्रों की ओर अधिक प्रवासित हो रही है। जनसंख्या भूगोल के महान विद्वान ट्रिवार्थ ने सच ही कहा है कि किसी स्थान की जनसंख्या परिवर्तन के अध्ययन में जन्म एवं मृत्यु की तरह प्रवास भी एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

मुख्य शब्द : उत्तराखण्ड, जनांकिकी विश्लेषण, उत्प्रवास।

प्रस्तावना

उत्तराखण्ड के एक क्षेत्र से प्रवासित होकर जब लोग दूसरे क्षेत्र में बसते है, तो अनेक समस्याएं उत्पन्न होती है। प्रेषक क्षेत्र में कौन से कारक है? मूल क्षेत्रों की सामाजिक आर्थिक विशेषतायें क्या है? इन सब तथ्यों की जानकारी से यह ज्ञात करना है कि क्षेत्र की परिस्थिति प्रवास के सामाजिक अभिप्रेरणात्मक कारक क्या है?

अध्ययन का उद्देश्य

अध्ययन का मुख्य उद्देश्य उन लक्षणों व आधारों का विश्लेषण करना है जिससे ग्रामीण उत्प्रवास को बल मिला है। अध्ययन के उद्देश्य निम्न प्रकार से हैं

1. उत्प्रवास से स्थानीय पर्यावरण एवं व्यवसाय पर प्रभाव।
2. उत्प्रवास के परिणाम स्वरूप लिंगानुपात पर प्रभाव।
3. उत्प्रवास के फलस्वरुप/प्राकृतिक संसाधनों के दोहन पर प्रभाव।
4. उत्प्रवास के कारण पशुपालन एवं प्राकृतिक वनस्पतियों का अन्योन्य क्रियाओं पर प्रभाव।
5. उत्प्रवास से स्थानीय प्राथमिक क्रियाओं पर प्रभाव।
6. उत्प्रवास को आंकलित करने के लिए विकास स्तर एवं ग्राम स्तर पर अन्वेंषण करना।

शोध पद्धति

उत्प्रवास जनसंख्या अध्ययन का विशिष्ट पहलू है और अध्ययन प्राथमिक आंकड़ो पर बहुत कुछ निर्भर करता है। जन्म–मृत्यु पंजीकरण के अभाव में इस विशेष सूचना के स्रोत प्राथमिक आंकड़ों पर ही संभव है। हिमालय में जनसंख्या उत्प्रवास अध्ययन का महत्वपूर्ण विषय है। अध्ययन में प्राथमिक आंकड़ों का संग्रहण उत्प्रवास पर भौगोलिक पर्यावरण एंव विकास के प्रभावों का आंकलन करने के लिए ग्रामों का चयन विकास और भौगोलिक स्थिति के विभिन्न पक्षों को ध्यान में रखते हुए किया गया। स्थानिक अर्थव्यवस्था एवं पर्यावरण पर उत्प्रवास प्रभाव का आंकलन प्रवासित एवं अप्रवासित परिवारों में तुलनात्मक अध्ययन पर आधारित होगा। पौड़ी जनपद में जनसंख्या को प्रवजन के विश्लेषण के लिए विभिन्न इकाइयों का आधार किया जायेगा।

विधि तंत्र

प्रवास का विश्लेषण जनगणना के प्रकाशित एंव अप्रकाशित आंकड़ों के आधार पर किया गया है। जनगणना के आंकड़ों को तहसील, विकासखण्ड एवं ग्राम स्तर पर तुलनात्मक मूल्यांकन किया गया है। आयु संरचना का तुलनात्मक मूल्यांकन 09 आयु वर्ग से 19 आयु वर्ग एवं 19 से 44 आयु वर्ग का डाटा एकत्रित किया जिसमें 06 वर्ग का आंकड़ा साक्षात्कार द्वारा प्रत्येक विकासखण्ड से दो गांवों का उपलब्ध न होने पर 09 आयु वर्ग से 19 आयु वर्ग एवं 19 आयु वर्ग से 44 आयु वर्ग को दो भागों में विभक्त कर तुलनात्मक पुरूष–स्त्री प्रवास प्रतिशत दर्शाया है।

जिससे 09 आयु वर्ग 19 आयु वर्ग में पुरूष एवं स्त्री दोनों का अधिकतम एवं न्यूनतम तुलनात्मक प्रवास निकास कर शोध विषय को मूल्यांकन किया गया है। इसी प्रकार 19 से 44 आयु वर्ग तक पुरूष–स्त्री तुलनात्मक प्रवास दर्शाते हुए अधिकतम एवं न्यूनतम प्रवास प्रतिशत के माध्यम से टेबल द्वारा दिखाने का प्रयास किया गया है।

प्रदत्त विश्लेषण

प्रवासियों के पड़ाव नियत स्थानों में परिवर्तन (1980–2005)

दूरी किलोमीटर में Distance in kilometers	क्षेत्र Area	Percentage of Migrants 1980-2005	
Below 5	Neighborhood- पड़ोसी	49.85%	49.13%
5-25	Block - विकासखण्ड	51.87%	48.12%
25-50	Tehsil- तहसील	56.91%	43.08%
50-100	District- जिला	52.18%	47.81%
100-250	Adjoining States- सीमीपवर्ती प्रदेश	51.51%	48.48%
Above 250	Intra Country - देश के भीतर	54.40%	45.59%

सन् 1980–2005 तक प्रवासियों के वितरण में 50 तक थोड़ा परिवर्तन हुआ है। उससे आगे बाह्य प्रवासियों का प्रतिशत बढ़ने लगा। वर्तमान ग्रामीण पड़ोसी अपने क्षेत्र विशेष के 2 किमी0 3 किमी0 या 5 किमी0 से 250 किमी0 तक छिटपुट प्रवासी फैले हुए है। 1980 में जहाँ जिला उत्तराखण्ड प्रदेश और पूर्व अविभाजित उत्तर प्रदेश जो अलग हैं में 7 किमी0 10 किमी0, 100 किमी0 एवं 100 से 250 किमी0 दरम्यान अपने पड़ाव या नियम स्थान बनाये हुये हैं। पिछले दो दशक से प्रवासियों के पड़ाव या नियत स्थानों में परिवर्तन आया है। लगभग 45.59 प्रतिशत प्रवासी अपने जन्म स्थान से 250 किमी0 की दूरी पर रहे हैं। प्रवास में यह परिवर्तन रचना एवं प्रकृति स्वरूप अभिप्रायपूर्ण गढ़वाल हिमालय से हो रहा है। तालिका नं0 2 का अवलोकन करने से यह विदित होता है कि प्रवासियों का पड़ाव 1980 की तुलना में 2005 में प्रवासियों के आश्रय स्थलों के दूरी के साथ प्रतिशत में परिवर्तन नहीं आया। 250 किमी0 की दूरी पर देश के भीतर रह रहे प्रवासियों का प्रतिशत 1980 की तुलना में 2005 में लगभग 11 प्रतिशत घट गया है। तहसील स्तर पर प्रवासियों का पड़ाव प्रतिशत 1980 के चरम पर बढ़कर 56.9 प्रतिशत हो गया इसकी तुलना में 2005 में लगभग 13 प्रतिशत घट गया जबकि अगले दो दशको में कुछ प्रतिशत में वृद्धि हुई।

प्रवास प्रभावित गाँवों के आधुनिकीकरण के कुछ माप

गाँव	वाह्य प्रवास का प्रतिशत	लाभान्वित			परिवारों का प्रतिशत		
		आधुनिक मकान	शौचालय सुविधा	कुकिंग गैस	जल संयोजन	टेलीविजन सेटस	टेलीफोन कनेक्शन
कठूड	54.84	31.54	29.96	30.59	29.96	28.39	26.18
कुरांसी	61.90	30.76	2769	26.15	27.69	24.61	23.07
जामल	61.92	27.95	26.08	25.46	26.08	24.84	24.00
पातल	46.64	38.04	35.2	33.6	35.2	32.0	32.0
सारामल्ली	28.98	34.23	31.53	28.82	31.53	29.72	27.92
मलेथा	42.85	21.42	16.60	14.28	16.66	19.04	14.28
कस्याली	12.67	41.66	36.11	37.5	36.11	34.72	31.94

स्रोत – आदर्शग्रामों का शोध छात्रा द्वारा सर्वेक्षण के आधार पर

प्रवास (स्थानान्तरण) में उत्प्रेरक भूमिका

गढ़वाल हिमालय क्षेत्र में ग्रामीण बाह्य प्रवास एक सक्षम स्वतंत्र कारण के रूप में प्रदेशीय परिस्थितिकी मे समाहित हो गया है। यह अन्तः रथ सुदूरवर्ती क्षेत्रों में समयानुसार उत्पन्न सामान्य रूपरेखा में बढ़ रहा है। लेसर हिमालय क्षेत्र का जनसमूह आर्थिक रूप से सम्पन्न एवं विकसित बाह्य हिमालय क्षेत्र एवं ऊँचे पहाड़ी घाटियों में रहने वाले ऊँचे पदों पर सरकारी नौकरी में आसीन भोटियां लोगों के बीच (दो के बीच) सैन्डविच जैसी स्थिति बनी हुई है। यह निर्विवाद सत्य है कि उच्च पहाड़ी क्षेत्रों में जनसंख्या के निर्वाह के साधन सीमित है। प्रधानतया खाद्यान्न पर आधारित जीविका वृत्ति पर मरहम पट्टी (दन्तोकरण) करने वाला अब तक कोई क्रांतिकारी परिवर्तन (जैसे –औद्योगिक, सफेद क्रान्ति, हरित क्रान्ति, पीला क्रांति, नीला क्रांति) गढ़वाल में अभाव दूर नहीं कर सका है। इस कारण से ग्रामीण बाह्य प्रवास अक्षुण्ण बना हुआ उसी प्रकार से जारी है।

ग्रामीण बाह्य प्रवास गढ़वाल हिमालय में दो तरह की भूमिका अदा कर रहा है, एक तो क्षुधा से मुक्ति देने वाला और दूसरा आधुनिकीकरण के प्रतिनिधि के रूप में उत्तराखण्ड में परिचर्चा को स्वयं उत्पन्न एवं उत्तेजित किया है सम्पूर्ण बाह्य प्रवासियों की अपने पैदाइशी आदतों, गृह निर्माण विद्या, पहनावा, भोजन इत्यादि में अधिक परिवर्तन आया है।

गढ़वाल में आज अधिक प्रभावी जीवन निर्वाह कृषि ज्वार बाजरा के बदले भोजन चावल हो गया। सभी जगह ये लोग दालभात को तवज्जों देते हैं। भवन निर्माण की पुरानी परंपरागत पत्थर स्लेट रिवाज को बदल कर

ईंट के लेंटर का प्रयोग बढ़ गया है। पिछले दो दशक से गढ़वाल के महिलाओं के बाह्य प्रवास की बढ़ोतरी तथा छात्रों एवं दूसरों पर आश्रित लोगों द्वारा पूरे वातावरण संबंध को निश्चित रूप प्रभावित किया है। महिलाओं में श्रमाभाव के ह्रास से जंगलों से चारा–ईंधन के एकत्रीकरण को भी प्रभावित किया है। जिसके परिमाणस्वरुप पालतू जानवरों के ह्रास होने से प्राकृतिक वनस्पतियों का शोषण अतिक्रमण कम हुआ है। शिक्षा के क्षेत्र में अधिक सुविधा के होने से छात्रों का ढाई से तीन गुना हिस्सेदारी पिछले दशक में बढ़ी है। अगर छात्र–छात्राओं को गणना से बाहर कर देखें तो लगभग बाह्य प्रवास लेसर हिमालय से हो रहा है।

उत्तराखण्ड में बाह्य प्रवास द्वारा, शिक्षा–उच्च शिक्षा के प्रतिशत को बढ़ाने में विशेष योगदान किया है। विपरीत उन क्षेत्रों के जो दूरस्थ पहुँच से बाहर प्रलोभनों से फँसे दुर्गम भूमि प्रदेश में है। आदर्श ग्रामों के आधार पर 81.57 प्रतिशत शिक्षा यहाँ पर है जिसमें प्राइमरी स्तर पर 16 प्रतिशत, जूनियर हाईस्कूल 18 प्रतिशत, हाईस्कूल 22 प्रतिशत, है। इन्टरमीडिएट 18 प्रतिशत, स्नातक 16 प्रतिशत जूनियर हाईस्कूल 18 प्रतिशत, हाईस्कूल 22 प्रतिशत, इन्टमीडिएट 18 प्रतिशत, स्नातक 16 प्रतिशत एवं स्नातकोत्तर 6 प्रतिशत लगभग शिक्षित निर्वाह का कोई लाभदायक एवं मूल्यदायक प्रलोभन नहीं देती। इस परिस्थिति में प्रवास अवश्यमभावी हो गई है।

गढ़वाल हिमालय के बहुतायत गाँव इस स्थिति में नहीं है कि वे अपनी (भोजन) खाद्य पदार्थ की आवश्यकता पूरी कर सकें, ऐसी अवस्था में जबकि गढ़वाल हिमालय 1981 का 82.8 प्रतिशत मानववल कृषि कार्य में सन्निध होकर प्रति व्यक्ति आय प्रतिदिन 4.00 रूपये है, प्रति व्यक्ति औसत 622 कैलोरी उपभोग कम होता है।

ऐसी परिस्थितियों में जीवन के रहन–सहन का स्तर देखने पर आभास होता है कि बहुत ही अव्यवस्थित है। जबकि तालिका 10 को देखने से पता चलता हैं बाह्य प्रवास से प्रभावित गाँव उपनगरीय सुविधाओं का सदुप्रयोग कर रहे है। ग्रामीण प्रवासियों द्वारा लेंटर की छत और गैस (ईधन) की सुविधा पर्यावरीयक्षरण को बन्द करता है। पौड़ी गढ़वाल जनपद लगातार बाह्य ग्रामीण प्रवास रहा है। जहाँ प्रति व्यक्ति वार्षिक आय 1091.0 रूपये 2004–05 के दरम्यान रही।

निष्कर्ष

लेसर हिमालय क्षेत्र (गढ़वाल में ग्रामीण बाह्य प्रवास सामाजिक एवं आर्थिक संरचना में एक खाई विकसित कर रहा है। धरातलीय उच्च विकास एवं वर्तमान सामाजिक आर्थिक जीवन स्तर के बीच निम्न स्तर के आर्थिक क्रियाकलाप तथा सरकार के विकासोन्मुख प्रयास दोनों ही ग्रामीण बाह्य प्रवास को रोकने में नहीं हो पा रहे हैं। 250 कि0मी0 की दूरी पर देश के भीतर रह रहे प्रवासियों को प्रतिशत 1980 की तुलना में 2005 में लगभग 11 प्रतिशत घट गया है। तहसील स्तर पर प्रवासियों का पड़ाव 1980 में चरम पर बढ़कर 56.9 प्रतिशत हो गया था इसकी तुलना में 2055 में 13 प्रतिशत घट गया। अगले दो दशकों में कुछ प्रवास प्रतिशत में वृद्धि हुई है। प्रवास से लौटे हुए प्रवासी सामाजिक कार्यों में अधिक सफल सिद्ध हो रहे है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

Bhend, A.A. and kanitkar (1982), Principles of Population studies Himalayan Pub. House, Bombay.

Garneer, J.B. (1996), Geography of Population, Longmans London.

Gosal, G.S. (1970), Population Geography, Review of Survey Report in Geography, ICSSR, New Delhi.

Trewartha, G.T. (1960), A geography of Population, world Pattern John Wiley, New York.

Woods, Report (1982), Theoretical Population Geography, Longman Group Ltd. New York.